मोगली बाल उत्सव • शहर के उत्कृष्ट स्कूल में हुआ जिला स्तरीय कार्यक्रम, पांच टीमें हुईं शामिल, 8 प्रतियोगी हुए पुरस्कृत

केबीसी की तर्ज पर हुई स्पर्धा, गलत जवाब पर काटे 5 अंक

भास्कर संवाददाता | बड़वानी

शहर स्थित उत्कृष्ट स्कूल में मंगलवार को जिला स्तरीय मोगली बाल उत्सव मनाया गया। इस दौरान पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण जागरुकता लाने को लेकर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता कौन बनेगा करोड़ पति (केबीसी) की तर्ज पर हुई। बच्चों ने हॉट सीट पर बैठकर सवालों के जवाब दिए। कार्यक्रम में जिले के पांच स्कूलों की टीमों ने हिस्सा लिया।

मोगली उत्सव प्रभारी आरएस मुवेल ने बताया मंगलवार दोपहर में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें कनिष्ठ वर्ग (छठी से आठवीं तक के बच्चे) की दो टीम और वरिष्ठ वर्ग (9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थी) तीन टीमें शामिल हुईं। एक टीम में चार विद्यार्थी शामिल थे। प्रतियोगिता के दौरान बारी-बारी से टीम सदस्यों से सवाल किए गए। अंत में 8 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इस दौरान प्राचार्य आरएस जाधव, आईसी शर्मा, अनिता चोयल, डॉ. मीना राठौर, परिधि परिहार सहित स्टाफ और स्कूली विद्यार्थी मौजूद थे।

प्रतियोगिता के बाद पुरस्कार देते हुए डीईओ महेंद्र निहाले।

प्रतियोगियों को तीन लाइफ लाइन भी दी गई

एंकर बने प्रकाश गोयल ने बताया विद्यार्थियों को तीन लाइफ लाइन भी दी गई थी। इसमें विद्यार्थी प्रश्न का उत्तर देने के लिए प्रश्न बदलवा सकता था। 50 फीसदी सही जवाब कह सकता था और जनता की राय ले सकता था। इसके अलावा एक प्रश्न का सही जवाब देने पर 10 अंक दिए गए। वहीं जिन्होंने गलत जवाब दिया तो 5 नंबर काट लिए गए। कनिष्ठ वर्ग की टीमों से पांच-पांच प्रश्न पूछे गए। वहीं वरिष्ठ वर्ग की टीमों से 7-7 प्रश्न पूछे गए। एक प्रश्न का जवाब देने के लिए एक मिनट का समय निर्धारित किया गया था।

इन विषयों पर आधारित थे प्रश्न

प्रतियोगिता के दौरान मप्र के राष्ट्रीय उद्यान, मप्र सामान्य ज्ञान, जनसंख्या, वन्य जीव सहित अन्य विषयों पर आधारित प्रश्न पूछे गए। उन्होंने बताया विद्यार्थियों से विद्यार्थियों से पूछे गए प्रश्नों में मुख्य प्रश्न थे सफेद शेरो की भूमि किसे कहा जाता है। वृक्षों का आदमी किसे कहा जाता है। वन्य संरक्षण अधिनियम कब पारित हुआ। पर्यावरण प्रदूषण फैलाने का मुख्य प्रदूषक कौन है।

जादू नहीं विज्ञान है पर कार्यशाला • जिले भर के सरकारी हाई व हायर सेकंडरी स्कूलों के 250 शिक्षकों ने लिया भाग

विज्ञान के शिक्षकों ने बताया तांत्रिक-ओझा के 'चमत्कारों' का सच

भास्कर संवाददाता | सागर

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के तहत मंगलवार को एक्सीलेंस स्कूल में जिला स्तरीय जादू नहीं विज्ञान है, समझना-समझाना आसान है कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मास्टर ट्रेनरों ने वैज्ञानिक आधार पर तांत्रिक और ओझा द्वारा किए जाने वाले चमत्कार करके दिखाए। कार्यशाला में जिले भर के हाई व हायर सेकंडरी स्कूलों से करीब 250 शिक्षकों ने हिस्सा लिया।

कार्यशाला सुबह करीब 11 बजे शुरू हुई। इसमें जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर नीतू सिंघई, जीपी चौरसिया और एनके अहिरवार ने बताया कि समाज में व्याप्त अंधविश्वास का तांत्रिक और ओझा फायदा उठाते हैं। वह जो भी

चमत्कार करते हैं वह आध्यात्मिक शक्ति नहीं बल्कि विज्ञान के चमत्कार होते हैं। कार्यशाला में स्कूलों के विज्ञान के शिक्षकों को एक-एक कर कई गतिविधियां करके दिखाई गईं। साथ ही इन गतिविधियों से स्कूल के बच्चों को रूबरू कराने और समाज को जागरूक करने का आह्वान किया गया। कार्यशाला में जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. महेंद्र प्रताप तिवारी, गिरीश मिश्रा, एक्सीलेंस प्राचार्य आरके वैद्य, जिला विज्ञान अधिकारी एनके श्रीवास्तव तथा शैलेंद्र जैन सहित जिले भर से आए शिक्षक उपस्थित थे।

ओझा ऐसे झाड़ते हैं पीलिया रोग

इसमें केमिकल थैरिक क्लोराइड को चूना में मिलाकर हाथों पर लगाया जाता है। इससे रासायनिक गतिविधि शुरू हो जाती है। कुछ समय बाद हाथों पर पानी डालने से वह पीले रंग के साथ निकलने लगता है।

• **ऐसे निकलती है नारियल से दिनाई :** सामान्य तौर पर ओझा लोगों के सिर से नारियल का उतारा करते हैं। इसमें वह नारियल को तोड़कर उसके अंदर से कील, कांच के टुकड़े तथा अन्य वस्तुएं निकालते हैं। जिसे दिनाई बताया जाता है। जबकि होता यह है कि नारियल में पीछे की तरफ जटा के पास छेद होता है। इसमें ओझा पहले से ही बड़ी सुई से छेद कर यह वस्तुएं डाल देते हैं। उतारा करने के बाद नारियल के अंदर से यह चीजें निकालकर दिखा देते हैं।

• **पानी या नारियल में आग लगाना :** सोडियम क्लोराइड को पानी में डालने से उसमें आग लग जाती है। पानी में इसकी मात्रा खत्म होने के बाद आग बुझ जाती है। इसी पदार्थ को तांत्रिक और ओझा नारियल के पीछे जटाओं में बने छेद से कच्चे नारियल के अंदर डाल देते हैं, जिससे उसके जटाओं में आग लग जाती है।

• इसी तरह सिक्के या किसी भी वस्तु को चांदी में बदलना भी आसान है। मरक्यूरिक क्लोराइड को तांबे या पीतल धातु पर रगड़ने से उस पर पारे की परत चढ़ जाती है। इससे वह चांदी की तरह चमकने लगता है। कुछ देर बाद परत उतरने से वापस अपने स्वरूप में आ जाता है। इसी केमिकल को एल्युमीनियम धातु पर रगड़ने से भभूत जैसा पदार्थ झड़ने लगता है।